❀ समर्पण ❀



ग्रंथकार इस स्तोत्र को श्रीमती माजी महारानी खुशहालकुँवरजी साहिबा इलाकेदार रियासत बरौली जि॰ अलीगढ़ की सेवा में श्रीमान् महाराज पं॰ परशुरामजीशर्म्मा दीवान तथा मैनेजर रियासत के द्वारा होली महोत्सव के समय समर्पण करता है।



ओ३म्तत्सत् ।

यजुर्वेदीय-

श्रुतिनवरत्न भाषा भूमिका

अचिंत्याऽव्यक्तिरूपाय निर्गुणाय गुणात्मने ।
समस्तजगदाधारमूर्तये ब्रह्मणे नमः ॥ १ ॥
मन्दः कवियशः प्रार्थी गमिष्याम्युपहास्यताम् ।
प्रांशुलभ्ये फलेलोभा दुद्बाहुरिववामनः ॥ रघु ।

दोहा-सुनहु दास आरत बिनय, पण्डित जन कवि मैन ।
चूक मूक सम निरख लखि, जिम सुत तोतल बैन ॥

लिखनसकतममतिअतिभोरी । विद्या बुद्धिहीन वय थोरी ॥
जानतछंद भेद कुछ नाहीं । तृणसम काव्यकलामोमाहीं ॥
चाहत मैं कविपद निज पावन । जिम बड़वृक्षसमस्याबामन ॥
करतसोही चारितार्थ कहावत । लखिखर वाज खुरीबनबावत ॥
नाहिंकुछ साधुसमागम कीना । पापीसबविधि धर्म्मविहीना ॥
दीन हीन मतिमंद गँवारू । चाहत करन माणिनव्यवहारू ॥
चहत पंख बिन गगनउड़ाहीं । चढ़त यथाविन पग गिर नाहीं ॥
जोसमस्त निजलिखोंढिटाई । हो उपहास्य न मोर भलाई ॥

दोहा-चाहत पीठ पिपीलिका, जिम पाथरकी भीत ।
तैसेही मतिमँद मम, दृढ़ चित कीन्ह अनीति ॥

करहुँ छंद श्रुतिभाव प्रकाशा । निश्चय होय मोर उपहासा ॥
सब जग जानत वेद बड़ाई । कहा महत्व लिखोंमें भाई ॥

कहँ श्रुति नित्य पवित्र अनादी ।कहँ जड़मतिममामिथ्यावादी॥
कहँ श्रुतिसागर ज्ञान अथाहा। थकितभये ऋषिमुनिगुणगाहा॥
बहु चतुआश्रम व्रतआचरिता । योगी योगअष्टविधि करता॥
नारदादिब्रह्मादि मुनीशा । कपिलकणादि अत्रिवागीशा ॥
मुनि मनु पातंजलिभृगु ज्ञानी । जिनकरयशइतिहासवखानी॥
सिद्ध साधु ऋषिकाविबुधजोई । अंतिम कहेउ नेतिश्रुतिसोई॥
सोरठा—मतिलघु काज महान, ऋषिमुनिगत नहिंअंत पथ।
मैंशशि बाल समान, करसाहसचाहत गहन ॥
तो कहा असविचारममनिको। हो अवश्य शंका सबहिको ॥
तदपि कहूं कुछ बिनय वहोरी। क्षमहु सुजन सुनाविनतीमोरी॥
है दृष्टांत सकल मम एहा। करतशृगाल सिंह प्रण जेहा ॥
कबहुं न ममम उरयह आई। होय लाभ या मिले भलाई॥
पुनजोबालसमयअभिलाशा । अन्यग्रंथि लखि करत प्रकाशा॥
शब्द अशुद्धि दृष्टि कविपरहीं।क्षमाजान आपन सुत करहीं॥
खलउपहास्य अहितममकैसे । बोलतश्वान निरखशशिजैसे ॥
सत श्रुति भाष्यभाव अनुसरहों । उलथा तासु छंदप्रतिकरहों॥
दोहा—यद्यपि नहिं बलबुद्धि कुछ, धर्म अर्थ सत नीति।
उलट सीध श्रुति वचनकर, होत चित्त दृढ़ प्रीति॥
छंद जेहि सुजन गान कुगान गावत सकल ते बिसरावहीं।
सो छंद श्रुतिनवरत्न तेहिनर मुदित चित नित गावहीं ॥
सर्वत्र वेदप्रचारहो निज शक्ति पुनि निजमत यथा ।
उतसाह करें विशेषबुधि जिमि श्रवणशिशुसुखहरिकथा॥
यहमम काव्यवाटिका भाई । है सर श्रुति नवरत्न सुहाई॥
अक्षरलेख धातु क्रम जोई ।नवघट मण माणिकयुतसोई॥

दोहा छंद सोरठा जे ते । नवपल्लव नाना तरु तेते ॥
शोभित ओम मंत्र प्रति कैसे । सुमन माल सुरसरितटजैसे॥
अन्वय अर्थ विभक्ति विधाना ।दीखत अटित रत्नसमनाना॥
तैत्तरीय व्याहृति अतिपावन ।विकसताजिमसरकमलसुहावन॥
छंद देव ऋषि स्वर यह भाँती ।फूलत सर्व सुमन जिमपाँती॥
वरणों कहा मनोहरताई । निगमागम सम्मति नाहिंपाई॥
दोहा—अलंकार उपमा तथा, रोचिक व्यङ्ग प्रकार ।
मानों हंस मयूर वन शुककोकिला प्रसार ॥
लागत फल वहु भाँतिअनेका । धर्म आदि विज्ञान विवेका॥
परम पवित्र नीर सरनी को ।जाहिसम तुल्यसुधारसफीको॥
तेहिवनवास करतभट भारी । कामक्रोध आदिक भयकारी॥
द्वेष तथा आलस्य घनेरे । जान न देत पथिक वहु फेरे॥
जिनकर परम उग्र तप होई । पहुँचत सतसहस्र में कोई ॥
यजुवन मग अतिशय काठिनाई । जहँयह मान सरोवर जाई॥
*योगश्चित्त वृत्ति निरोधा । आसिअस होंय नष्टशठयोधा॥
कर अभ्यास परम दृढ़ताई । पहुँचो मान सरोवर जाई ॥
दोहा—कर्म वचन मनकर करें, जो यह मज्जन पान ।
विन प्रयास संतत महित,पावैं पद निरवान ॥
करें अनुग्रह सकल मिल, जो श्रोता वक्तादि ।
छंद वद्ध श्रुति को करों, भाष्य भाव अनुवाद॥
यह श्रुति भाव छंद पदमेरे ।जिम छोटे मुख वचन बड़ेरे॥
है यह मोहि प्रवल विश्वासा ।नाहिंममभणितयोग्यउपहासा॥

नोट*योगश्चित्त वृत्तिनिरोधःपातञ्जलि योग ॥ अर्थात् चित्तकी वृत्तियों का सब प्रकारसे निरोध करने को योग कहतेहैं ॥

जिनमिथ्या वकवाद विवादा । कीन असत्यग्रंथि अनुवादा ॥
परकीरत निंदा अपमाना । कामानिबंध रचे पद नाना ॥
कीनन जिन श्रुति सिद्ध भलाई। हैं तेहि हंसन योग्यसवभाई॥
भणित मोरसवविधिअति फीकी। केवल सत्यवचनकरनीकी ॥
है यह मम गौरव कर कारण । सम्मय कीन नहिंनष्टअकारण॥
जो पाठक मम श्रम सनमानों ।तोऋषिकृतिऋगभाष्यपरवानों॥

सोरठा—कविता भेद अपार, लेशमात्र मम उरु नहीं ।
तेहि कारण बहुवार विनय महाशय करत मैं ।

दोहा—नहीं ब्रलबुद्धि विचारकुछ, नहिं विद्याधन धाम ।
भेंट करैं कहा आपकी, यह द्विज बाबूराम ॥
कारण प्रेम वम भाव श्रुति, जोर गांठ जो दीन।
सो अरिपित मैं पुष्प इव श्रुति नव रत्ननवीन ॥

आपका शुभचिंतक ।

सोरठा—शर्मा बाबूराम, विप्र गोत्र भारद्वाजिय ।
चन्दौसी मम ग्राम, कर्णक्षेत्र मैं वासगव ॥

आरती—याविधि हरिको पावो ॥ रेसाधो ।
जीव पुजारी टहल करत मन मंदिर देहि बनावो ।
व्यापक ब्रह्म अखंड जोग सिंहासन ताहि चढावो ॥ रे साधो ॥
सत्य कर्म विज्ञान रूप सुरसरि अस्नान करावो ।
धृति क्षमा दसधर्म रूप लक्षण शृंगार सजावो ॥ रे साधो ॥
ब्रह्मचर्य्य वृत्ति दीपक तामें धृत विद्यादि डरावो ।
श्रुति सिद्धांत वनाकर बाती चौ मुख दीप जरावो ॥ रे साधो ॥
शांति आसनी में दृढ़ता पद्मासन ध्यान लगावो ।
शम दम आदिक इड़ा पिंगला क्रमकर नाद बजावो ॥ रे साधो ॥
श्रद्धा भक्ति ज्ञान ध्यानादिक उत्तम भोग भुगावो ।
योगश्चित्त वृत्ति निरोधकर संवपट बंद करावो ॥ रे साधो ॥
ब्रह्म ज्ञानरूपी चरणामृत पी आनन्द मनावो ।
बाबू या विधि करत आरती जीवन मुक्ति कहावो ॥
रे साधो या विधि हरिको पावो ॥

ओ३म्

यजुर्वेदीय-
श्रुतिनवरत्न भाषार्थ

श्री० कवि पं० बाबूरामजी शर्मा चन्दौसी वर्तमान
कर्णक्षेत्र निवासी विरचित

दोहा—सिद्धिसदन मंगलकरण, हरणदुःख भगमूल ।
हे त्रिभुवन व्यापक प्रभु, सदारहो अनुकूल ॥
देहु सतोगुण बुद्धिबल, दृढ़ताविविध प्रकार ।
करहुँजासु आरंभ में, श्रुतिनवरत्न विचार ॥

ओ३म्

ओ३म् विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव । यद्भद्रं तन्न आसुव ॥ य० अध्याय ३० मंत्र ३

भावार्थ* "ओ३म्" यह मुख्य परमेश्वर का नामहै जिसके साथ अन्य सब नाम लगजाते हैं और अकार उकार मकार इन तीन अक्षरोंसे मिलकर बनाहै जैसे अकार से विराट् अग्नि विश्व इत्यादि और उकारसे हिरण्यगर्भः वायु तैजसादि तथा मकारसे ईश्वर आदित्य तथा प्राज्ञादिकोंका ग्रहण किया है यह सब नाम ईश्वर केही हैं ईश्वरके अनंत नामों में से यहां केवल नौ ९ नामोंकाही वर्णन ओमूके अंतर्गत किया है जैसा कि भाषाकाव्य से भली भाँति प्रकटहोता है परंतु अब हम धातु क्रम भेद नीचे लिखते हैं और यथावसर भाषाकाव्य में भी दिखला दियाहै जिसके सहारे से ओम् शब्दार्थ ठीक २ हृदयमें जमजावेगा ॥

---

* अ इसके तीन अर्थहैं विराट् १ अग्नि २ विश्व ३

राजृदीप्तौ धातुसे विराट्शब्द सिद्ध होताहै विविधन्नाम्नांचराचरञ्जगत्-राजते नाम प्रकाशते सविराट्, बहु प्रकारके जगत् को जो प्रकाश करे उसका नाम विराट् है ।

भावार्थ दोहा चौपाई में ॥

दोहा—मिले अकार उकारपुन अक्षर अंत मकार।
होत विदित याशब्दसे ईश्वर नाम अपार ॥

अञ्चुगति,पूजनयो: धातुसे अग्नि शब्द सिद्ध होताहै जो ज्ञानस्वरूप सर्वज्ञ जानने माप्तहोने और पूजाके योग्य है उसका नाम अग्नि है।

विशप्रवेशने,धातुसे विश्व शब्द सिद्ध होताहै प्रवेश करते हैं आकाशादिक भूत जिसमें उसका नाम विश्वहै इत्यादिक नाम अकार से लियेजाते हैं

उ भी तीन अर्थोंका वाचकहै हिरण्यगर्भ: वायु तैजसादि

हिरण्यानां सूर्यादीनांतेजसाङ्गर्भ: सहिरण्यगर्भ: जिससे सूर्यादिक तेजवाले पदार्थ उत्पन्न होके जिसके आधार रहते हैं उसका नाम हिरण्यगर्भ: है।

वागतगन्धनयो, धातुसे वायु शब्द वनाहै जो चराचर जगतको प्रलय करे अथवा धारण करे और सव बलवानों से भी वलवान्हो उसको वायु कहते हैं।

तिजनशाने,इस धातुसे तैजस शब्द वनाया जाताहै जो अपने आपही प्रकाशित होय और सूर्यादिक तेजों का भी प्रकाश करें उसको तैजस कहा गया इत्यादिक तीन नाम उकारसे ग्रहण किये जाते हैं।

मकार ईश्वर[1] आदित्य[2] प्राज्ञादिका[3] वाचकहै।

ईश ऐश्वर्ये, धातु से ईश्वर शब्द वनाया गयाहै जो सत्य विचार शील और जिसका ज्ञान सत्यहै अथवा जो अनन्त ऐश्वर्यवान् है उसको ईश्वर कहते हैं।

दोऽवखण्डने धातु से दिति शब्द वनाया अवखण्डनाम् विनाश: उससे क्तिन् प्रत्यय लगाने से दिति सिद्ध होताहै और जिसका नाशहै, उस का नाम दिति है,इसकारण जिसका कभी नाश नहो उसको अदिति कहते है और उसीका नाम आदित्यहै।

ज्ञा अववोधने, धातु से प्राज्ञ वनाया जाताहै जो ज्ञानी और सब ज्ञानियों से उत्तम ज्ञानवान् है उसका नाम प्राज्ञहै अथवा जो सर्व पदार्थोंको यथावत जानता है उसको भी प्राज्ञ कहतेहैं।

अत एव परमेश्वरका जैसा कि ओ३म नाम परम पवित्र है वैसा और कोई नहीं है इसीलिये ईश्वर के अनंत नामोंसे ओ३म् के अंतर्गत नौ ९ नामों की ही व्याख्या कीगई है ॥

दोहा—(राजृ दीप्तौ) धातुसे, भयो बिराट निकास ।
वहु प्रकार सब जगतको, जो इर करत प्रकाश ॥

जो वहु भाँत जगत उपजावे । सो जगदीश(विराट)कहावे॥
सर्व ज्ञानमय पूजन योगा ।(अग्निकीन)तेहि हेत प्रयोगा॥
(विश प्रवेशने) धातु लगाई । होत(बिश्व)तेहि पदसमुदाई॥
जामें सबनभ सर्व प्रकारा । होत प्रवेशत अर्थ अकारा ॥
रविशशि आदि प्रकाशकजोई । जेहिआधार विश्वसब सोई॥
आदिअंत सर्वस सबकाहू । कहत(हिरैण्यगर्भ)पद ताहू ॥
(वागतगन्धनयो) जोभ्राता ।सिद्धहोत (बायू)जग त्राता ॥
जो चर अचर प्रलयकरनाना। सर्व प्रकार प्रवलवल वाना ॥
धातु (तिजनशाने) से भाई। होतासिद्ध (तैजस) प्रभुताई ॥
जो स्वयमेव प्रकाशक होई। सकलप्रकाश प्रकाशित सोई ॥
ऋषि मुनिताहिउकारबतायो । करक्रम धातु बिचारलखायो॥
सत्य बिचार शील सत ज्ञाना । जो अनंत ऐश्वर्य्य विधाना॥

दोहा—अबिनाशी (आदित्य) गुण, ज्ञानी सर्वाधार ।
सर्व पदारथ रहित तेहि, जानहुं अर्थ मकार ॥

सो०—ईश्वर नाम अपार, होत बिदित नहिं योग बिन ।
बिरचेऊमति अनुसार, प्रणवाँतरगत नाम नव ॥

मंत्र संख्या (१)

नारायण ऋषिः सविता देवता गायत्रीछन्दः षड्ज स्वर ।

ओ३म् बिश्वानि देव सवितर्दुरितानि परा सुव॥ यद्भद्रं तन्न आसुव॥ यजु० अध्याय ३० मंत्र ३

भाषाभावार्थ हे (सविता) सकल जगत्के उत्पति कर्ता समग्र ऐश्वर्य्य

युक्त (देव) शुद्ध स्वरूप सबसुखों के दाता परमेश्वर आपकृपा करके (नः) हमारे (विश्वानि) सम्पूर्ण (दुरितानि) दुर्गुण दुर्व्यसन और दुःखों को (परासुव) दूर कर दीजिये (यत्) जोकल्याणकारण गुण और कर्म स्वभाव और पदार्थ हैं (तत्) वह सब हमको (आसुव) प्राप्त कीजिये १

भावार्थ छंदबद्ध

हे सप्तभुवन खंड रवि शशि आदि आदि चराचरम ।
जगदादि कारण सर्व विधि ऐश्वर्ययुक्त गुणागरम ॥
पुन(देव)दाता सुःख शुद्ध स्वरूप व्यापक सबकर्म ।
सर्वत्र जानन हार स्वामिन भूत और भवस्यतम ॥१॥
करके अनुग्रह नाथ हमारे हे जगत तारण तरण ।
(दुरितानि)और (परासुव) अथवा विथा कीजै हरण ॥
(यत) सत्य(भद्रं) मुक्ति कारक कर्म गुणसब दीजिये।
(तत आसुव)वह सकल हमको प्राप्त सुख पद कीजिये॥२॥

मंत्र संख्या (२)

हिरण्यगर्भः ऋषिः प्रजापतिर्देवता आर्षीत्रिष्टुप् छंदः धैवत स्वर ।

ओ३म् हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत् ॥ सदाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥ यजु० अ० १३ मंत्र ४

भावार्थभाषा—जो (हिरण्यगर्भः) स्वप्रकाश स्वरूप और जिसने प्रकाश करने हारे सूर्यचन्द्रमादि पदार्थ उत्पन्न करके धारण किये हैं जो (भूतस्य) उत्पन्न हुए सम्पूर्ण जगत्का (जातः) प्रसिद्ध(पतिः) स्वामी (एकः) एकही चैतन्य स्वरूप (आसीत्) था जो (अन्य) सबजगत् के उत्पन्न होने से पूर्व (समवर्त्तत वर्त्तमानथा(सः) सो (इमाम्) इस (पृथिवीम्) भूमि (उत) और (द्याम्)सूर्यादिको (दाधार)धारण कर रहाहै हम लोग उस (कस्मै)

सुख स्वरूप (देवाय) शुद्धपरमात्मा के लिये(हविषा) ग्रहण करने योग्य योगाभ्यास और अतिप्रेमसे (विधेम) विशेष भक्ति किया करें ॥ २ ॥

भावार्थ दोहा चौपाई में ।

जो (हिरण्यगर्भः) प्रभु, स्वयं प्रकाश स्वरूप ।
जिसने धारण कीन यह, रविशशिआदिअनूप॥
जो (भूतस्य) जगतका स्वामी । है प्रसिद्ध अद्वैत अकामी ॥
जो उत्पन्न सृष्टि से भाई । आगे (समवर्तत) सुखदाई॥
वर्तमान जेहि रहेउ गुसांई । काल भेद तेहिकर प्रतिनाहीं॥
(सः)सो ईश सत्य बुधिदायकाइस(पृथिवीम्)भूमिकरनायक ॥
यथा (द्याम्)रविशशिनभ जेते। सकल खगोल लोक सबतेते॥
पुन(दाधार)करतजो धारण । हम अस सुखस्वरूपकेकारण॥
हविषा ग्रहणकरन विधिजोई । करें (विधेम)भक्ति हमसोई ॥
बाढ़े नवविधि भक्ति तुम्हारी । हो जेहिमम मुद मंगलकारी॥

मंत्र संख्या (३)

प्रजापतिर्ऋषिःपरमात्मा देवता निचृत्त्रिष्टुप्छंदः धैवत स्वर ।

ओ३म् य आत्मदा बलदायस्य विश्व उपासते प्रशिषं यस्य देवाः। यस्यच्छायाऽमृतं यस्य मृत्युः कस्मै देवाय हविषा विधेम॥ यजु० अ० २५ मं. १३

भावार्थभाषा—(यः) जो (आत्मदा) आत्मज्ञान का दाता (वलदा) शरीर आत्मा और समाज के वलका देने हारा (यस्य) जिसकी (विश्वे) सब (देवाः) विद्वान् लोग (उपासते) उपासना करतेहैं और (यस्य) जिसका (प्रशिषं) प्रत्यक्ष सत्यस्वरूप शासन और न्याय अर्थात् शिक्षा को मानते हैं (यस्य) जिसका छाया)आश्रयही (अमृतम्) मोक्ष सुखदायक है (यस्य) जिसका न मानना अर्थात् भक्ति न करना ही (मृत्युः)

मृत्यु आदि दुःखका हेतु है हमलोग उस (कस्मै) सुखस्वरूप (देवाय) सकल ज्ञान के देने हारे परमात्माकी प्राप्ति के लिये (हविषा) आत्मा और अंतःकरण से (विधेम) भक्ति अर्थात् उसकी आज्ञा का पालन करनेमें तत्पर रहें ॥ ३ ॥

भावार्थ दोहा चौपाई में।

दोहा—(यः) जो (आत्मदा) आत्माका,दाता आत्म ज्ञान।
(बलदा) देह समाजको, जो देता बलदान ॥
(यस्य)जासु सुरविश्वउपासन।करत सत्य शासन अनुशासन॥
जेहि सतशिक्षा न्यायबखानत। सर्वदेव निश्चय तेहि जानत॥
जाकी (छाया) आश्रय भाई। रहै (अमृतम्)मुक्ती सुखदाई॥
मन क्रमवचन ध्यान जो लावै। सो अर्थात मुक्तिपद पावै॥
जाकर त्याग अमान न मानन॥निश्चय होत मृत्यु उपजावन॥
(कस्मै) अस सतसुःखस्वरूपम। सर्व ज्ञानमय विश्व अनूपम॥
तेहि कर हेत सकल हम भाई ।(हविषा) करें भक्ति चितलाई॥
मन कर करेहुं जो आज्ञाहोई। हों तत्पर पालें हम सोई ॥

मंत्र संख्या (४)

प्रजापतिर्ऋषिः परमेश्वरदेवता भुरगत जगतीछंदः धैवतस्वर।

ओ३म् यः प्राणतो निमिषतोमहित्वैकइ-द्राजाजगतोबभूव। यईशेऽअस्याद्विपदश्चतुष्पदः कस्मै देवाय हविषा विधेम॥ यजु० अ०२३मं०३

भावार्थ भाषा—(यः) जो (प्राणतः) प्राणवाले और (निमिषतः) अप्राण रूप (जगतः) जगत्का (महित्वा) अपने अनंत महिमासे (एक इति) एकही (राजा) विराजमान राजा (बभूव) है (यः) जो (अस्य) इस (द्विपदः) मनुष्यादि और(चतुष्पदः) गौ आदि प्राणियों के शरीर

की (ईशे) रचना करता है हम उस (कस्मै) सुखस्वरूप (देवाय) सकल ऐश्वर्य्य के देने हारे परमात्मा के लिये (हविषा) अपनी सकल उत्तम सामग्री से (विधेम) विशेष भक्ति करें ॥ ४ ॥

भावार्थ दोहा तथा सोरठासें।

दोहा–प्राणी पुन अप्राणका, जो (जगतः) संसार।
निज महिमाकर एकही, है राजा करतार ॥
सोरठा–(द्विपदः)जोनरआदि, (चतुष्पदः)गोप्रभृति जो।
(ईशे) रचत अनादि,निज महिमासे एक इव ॥
दोहा–(कस्मै) सुःख स्वरूपजो, सतवैभव दातार।
भक्ति करैं हम ताहिकर, बहुविधि वारम्वार ॥

मंत्र संख्या (५)

स्वयम्भूब्रह्मऋषिःपरमात्मादेवता निचृत्त्रिष्टुप् छंदः धैवतस्वर ॥

ओ३म् येन द्यौरुग्रा पृथिवी च दृढ़ा येन स्वः स्तिमितं येन नाकः ॥ योअंतरिक्षे रजसोविमानः कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥ यजु० अ० ३२ मं० ६

भावार्थभाषा–(येन) जिस परमात्माने (उग्रा) तीक्ष्णस्वभाव वाले (द्यौः) सूर्य्य आदि (च) और (पृथिवीम्) भूमिको (दृढ़ा) धारण (येन) जिस ईश्वरने (स्वः) सुखको (स्तिमितम्) धारण और (येन) जिसईश्वरने (नाकः) दुःख रहित मोक्षको धारण कियाहै (यः) जो (अन्तरिक्षे) आकाश में (रजसः) सब लोक लोकान्तरों को (विमानः) विशेष मानयुक्त (अर्थात् जैसे आकाश में पक्षी उड़तेहैं वैसे सब लोकों को निर्माण करता और भ्रमण कराता है) हमलोग उस (कस्मै) सुखदायक(देवाय) कामना करने के योग्य परब्रह्मकी प्राप्तिके लिये (हविषा) सब सामर्थ्य से (विधेम) विशेष भक्ति करें ॥ ५ ॥

भावार्थ दोहा चौपाई में

दोहा-(येन) जिस चिदानंदने, तीक्षण स्वभाववान ।
रविशशि आदि (च) औरभू, धारण कीन महान ॥

छंद-जेहि ब्रह्म सुख अथवा रहित दुख मुक्ति जिन धारणकरी ।
सतचित अनंद अनादि मुक्तिस्वरूप सर्वोपर हरी ॥
जो सर्वससखगोलमें सनमान कर धारणधरनि ।
नभ उड़त जिम त्रिविध खग करत मवलोक लोकाँतरभ्रमन॥

सोरठा-(कस्मै) सुखदातार , सर्व मनोरथ ब्रह्मकी ।
हमशर्म्मा बहुबार , पुन (विधेम) भक्तीकरें ॥

मंत्र संख्या (६)

हिरण्यगर्भ ऋषिः प्रजापतिर्देवता विराट्त्रिष्टुप् छंदः धैवत स्वर ॥

ओ३म् प्रजापते न त्वदेतान्यन्योविश्वाजाता-नि परिता बभूव॥यतकामास्ते जुहुमस्तन्नोऽस्तुवयं स्याम् पतयोरयीणाम् ॥ ऋग्०मं०१०सू०१२१

भावार्थ भाषा-हेप्रजापते) सब प्रजाके स्वामी जगदीश्वर (त्वत्) आप से (अन्यः) भिन्न दूसरा कोई (ताः) उन (एतानि) इन (विश्वाः) सब (जातानि) उत्पन्न हुए जड़ चेतनादिकों को (नः) नहीं (परिबभूव) तिरस्कार करताहै अर्थात् आपसर्वोपर हैं (यत्कामाः) जिस २ पदार्थकी कामना वाले हमलोग (ते) आपका (जुहुमः) आश्रयलेवें और वाञ्छा करें (तत्) उस २ की कामना (नः हमारी सिद्ध (अस्तु) होवे जिससे (वयम्) हमलोग (रयीणाम्) धनैश्वर्यों के (पतयः)स्वामी होवें ॥६॥

भावार्थ दोहा चौपाई ।

दोहा-(प्रजापते) हेसब प्रजा, स्वामीपरमपवित्र ।
(त्वत)तुमसे(अन्यः) नहीं, भिन्नकोईसर्वत्र ॥

उन इन युत (विश्वा) सबकोई । जग उत्पन्न चराचर जोई ॥
जड़ चैतन्य सर्वजग जोहू । (परिबभूव) त्यागत नहिं सोहू ॥
दीनदयाल अखिलगुणरूपन । हैं सर्वोपर आप अनूपम ॥
जेहि जगवस्तु मनोरथ मेरे । पुन जसकाम सत्यमन केरे ॥
(ते) तुम्हार हम सब जग जाता । (जुहुमः) लें आसरा विधाता ॥
हो सब अर्थ सुफल मनवानी । परिपूरण वैभव धनमानी ॥
होंयजासु हम सब सुखदाई । धनपरिवार कुटम अधिकाई ॥
धनऐश्वर्य पदारथ भोगें । (पतयः स्याम) पतीहमहोवें ॥
हो नित नूतन वृद्धि हमारी । द्विपदचतुष्पद सबसुखकारी ॥

मंत्र संख्या (७)

स्वयम्भूब्रह्मऋषिः परमात्मा देवता निचृत्त्रिष्टुप् छंदः धैवतस्वर ॥

ओ३म् सनो बन्धुर्जनिता सविधाता धामानि वेद भुवनानि विश्वा । यत्र देवा अमृतमानशाना स्तृतीये धामन्नध्यैरयंत ॥ यजु० अ० ३२ मं० १०

भाषाभावार्थ—हे सब मनुष्यो (सः) वह परमात्मा (नः) अपने लोगों को (बन्धुः) भ्राताके समान सुखदायक (जनिता) सकल जगत्के उत्पादक (सः) वह (विधाता) सबकामों के पूरण करने हारा (विश्वा) सम्पूर्ण (भुवनानि) लोकमात्र और (धामानि) नाम स्थान जन्मोंको (वेद) जानता है और (यत्र) जिस (तृतीये) सांसारिक सुख दुःखसे रहित नित्यानंदयुक्त (धामन्) मोक्षस्वरूप धारण करनेहारे परमात्मामें (अमृतम्) मोक्षको (आनशानाः) प्राप्त होके (देवाः) विद्वान्लोग (अध्यैरयन्त) स्वेच्छापूर्वक विचरते हैं वह ही परमात्मा अपना गुरु आचार्य्य राजा और न्यायाधीश है। अपने लोग मिलके सदा उसकी भक्ति कियाकरें ७

भावार्थ दोहा चौपाई में ।

दोहा—हेपुरुषो (सः) वह प्रभू निज जनको सुखदान ।
देता सर्वजगतापिता, (बन्धु) बन्धु समान ॥

(जनिता)सकलजगतउत्पादक।तेहिसमस्तजग कामसहायक॥
(विश्वा)सबभुवनत्रिभुवनको। नाम धाम जन्मादिमरणको॥
एक सेव सर्वान्तरयामी।जानतसबहिंसकलविधस्वामी॥
जेहि लौकिक सुख दुखसेभाई। है सो रहित मुक्ति सुखदाई॥
नित्यानंद युक्त जो धामन। अथवा मोक्षरूप कर कारण॥
तेहि में मुक्ति प्राप्त पद करते।निजइच्छितसुरलोकविचरते॥
सो गुरु न्यायाधीश हमारा। है आचार्य सकल संसारा॥
अपने जन मिल बैर विहाई। तासु करें भक्ती सब भाई॥

मंत्र संख्या (८)

दीर्घात्माऋषिः आत्मा देवता निचृत्त्रिष्टुपछंदः धैवतस्वर।

ओ३म् अग्ने नय सुपथा राये अस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्। युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठान्ते नमउक्तिं विधेम॥ अ.४०मं.१६

भाषाभावार्थ—हे (अग्ने) स्वप्रकाश ज्ञानस्वरूप सब जगत् के प्रकाश करनेहारे (देव) सकल सुख दाता परमेश्वर आप जिस से (विद्वान्) सम्पूर्ण विद्या युक्त हैं कृपा करके (अस्मान्) हमलोगों को (राये) विज्ञान व राज्यादि ऐश्वर्यकी प्राप्ति के लिये (सुपथा) अच्छे धर्मयुक्त आप्त लोगों के मार्ग से (विश्वानि) सम्पूर्ण (वयुनानि) प्रज्ञान और उत्तमकर्म (नय) प्राप्ति कराइये और (अस्मत्) हमसे (जुहुराणम्) कुटिलता युक्त (एनः) पापरूप कर्मको (युयोधि) दूर कीजिये इसकारण हमसबलोग (ते) आपकी (भूयिष्ठाम्) बहुत प्रकारकी स्तुति रूप (नम उक्तिम्) नम्रता पूर्वक प्रशंसा (विधेम) सदाकिया करें और सर्वदा आनन्द में रहैं॥ ८॥

भावार्थ दोहा चौपाई में।

दोहा—हे (अग्ने) स्वप्रकाशवा, प्रकाशस्य प्रकाश।
सकल सुःखदाता प्रभू, सर्व सुविद्या राश॥

हे जगदीश सुविद्यासागर । सर्व प्रकारअपार गुणागर ॥
हमको राज्य ज्ञान सुख तांई । प्राप्ति करावहु आप गुशांई॥
(सुपथा) मारग सतजन केरे । शिष्ट भये जेहिपथिक घनेरे ॥
सब सत्ज्ञान कर्म शुभ जोई । (नय)अब प्राप्ति करावहुसोई॥
पापकर्म दुरगुण युत जेते । हमसे दूर करहु हरि तेते ॥
यह कारण हम सब नर नारी ।वहुविधि आरत करें तुम्हारी॥
(नम उक्तिम्) नम्रता विधाना। करें पतितपावन हम नाना॥
जेहि सदैव आनंद मनावें । परमलाभ मुक्ती पद पावें ॥

विश्वामित्रऋषिः सवितादेवता दैवीबृहतीछन्दः मध्यमस्वर ॥

भूः भुवः स्वः* ॥

भावार्थभाषा—जो सव जगत्‌के प्राणोंका जीवन कराताहै और प्राणों से भी परेहै इससे परमेश्वर का नाम प्राण है सोप्राण भू का वाचकहै ।

और जो मुमुक्षुओंको और मुक्तों को सव दुःख छुड़ाके आनंदस्वरूप रक्खे इससे परमेश्वरका नाम अपानहै सो अपान भुवः शब्द का वाचकहै ।

और जो सबजगत् के विविध सुख का हेतु है और सर्वचेष्टाधार है इससे परमेश्वर का नाम स्वः है सो स्वः व्यानशब्दका वाचक है ॥

भावार्थ छंदबद्ध ।

(भुवरित्यपानः) अर्थ यह जो स्वयम (भुवः) अपानहै ।
सबमुक्ति और मुमुक्षुओं को देत जो कल्यान है ॥

नोट* भूः भुवः स्वः भूरितिवै प्राणाः भुवरित्यपानः स्वरितः व्यानः ॥
प्राणयति चराचरञ्जगत् स प्राणः ।
अपानयति सर्वदुःखं सोऽपानः ।
व्यानयति स व्यानः तैत्तरीय ॥

पुनशब्द (स्वः) अर्थात्जाने सुखस्वरूप यह संसार जो ।
बहुभाँति सुख कारण तथा सर्वस्य चेष्टाधार जो ॥

॥ तैत्तरीय ॥

मंत्र संख्या (९)

नारायणऋषिः सवितादेवता निचृद्गायत्रीछन्दः षड्जस्वर ॥

ओ३म् भूः भुवः स्वः ॥ तत्सवितुर्वरेण्यम्भर्गो देवस्य धीमहि धियो योनः प्रचोदयात् ॥ यजु० अ० ३६ मं० ३ ॥

पाठकगण ! ओ३म् तथा भूः भुवः स्वः व्याहृतियों का अर्थ लिखदिया गया अब गायत्री मंत्रका शब्दार्थ लिखाजाताहै ॥

भावार्थभाषा—इस सर्व जगत्को उत्पत्तिकरनेवाले सूर्यादि प्रकाशकों के भी प्रकाशक समग्रैश्वर्य के दाता (देवस्य) कामना करनेयोग्य सर्वत्र विजय कराने हारे परमात्मा का जो (वरेण्यम्) अतिश्रेष्ठ ग्रहण और ध्यानकरने योग्य (भर्गः) सबक्लेशों के भस्म करने हारा पवित्र शुद्धस्वरूप है (तत्) उसको हमलोग (धीमहि) धारण करें (यः) यह जो परमात्मा (नः) हमारी (धियः) बुद्धियों को उत्तम गुणकर्म स्वभावों में (प्रचोदयात्) प्रेरणा करें ॥

भावार्थ दोहा चौपाई ।

दोहा—सर्व जगत आधार जग, पालन पोषण हार ।
द्रव्योत्तम दाता पिता, त्रिकालज्ञ तिमरारि ॥

जो जगदीश सृष्टि कर धाता । सर्वप्रकाशक सकलसुखदाता ॥
जो कामना योग्य संसारा । है सर्वस्व महेश सहारा ॥
ग्रहण ध्यान जेहि साध्य अनूपम । भस्महेत दुखशुद्धस्वरूपम ॥
(तत्) तेहिको हम (धीमहि) भाई । धारण करें प्रेमचित लाई ॥
(यः) यह जो जगदीश हमारी । करे बुद्धि शुभकर्म प्रचारी ॥

हो सतज्ञान बुद्धि अस दीजे । (प्रचोदयात्) प्रेरणाकीजे॥
विद्याबुद्धि मुक्ति विधि जोई । उपजे ममउर श्रद्धासोई॥
देहु नाथ अस बलबुधि मेरी । होंहिय गतपथ सतजनकेरी॥
सोरठा—यह कारण बहुबार, करत प्रार्थना नाथ हम ।
कीजे अङ्गीकार, माँगत शर्मा बुद्धि शुभ ॥
रविशशिवार पवित्र सुहावनापर्वदिवस तिथिऋतु मनभावन॥
प्रतिदिन संस्कार दिन जोई । सर्व समय गावें सब कोई॥
करउपवास यज्ञ सब भाई । होंध्यानावस्थित चित लाई॥
प्रेमभाव दृढ़ सौच समीता । गावेंसबमिल कथा पुनीता॥
कहैं सुनें समझैं समझावें । तेहि नर परम मुक्ति पदपावें॥
तो निश्चय आदर में पावों । पुनरपि जोर गांठ कुछलावों॥
नहि मतिमोर लोभ चतुराई । कहूँ सत्य निज भुजा उठाई॥
देंय सहाय सुजनजन ऐसे । सुत चित चाह बढ़ावत जैसे॥
सोरठा—जो यह पाठ विचार, करें नितसंध्यासमय ।
पावें सुःख अपार, लौकिक परलौकिक सकल ॥

—o—

सोरठा—अजग्रह रस युग विक्रमी, तर्क मास शशि हीन ।
तिथितिथ रसदिन इतिकरी, श्रुति नवरत्ननवीन ॥

इतिश्री यजुर्वेदीय परमपवित्र स्तोत्र श्रुतिनवरत्न भाषार्थ
छन्द बद्ध श्री० कवि पं० बाबूरामशर्म्मा चन्दौसी
वर्तमान कर्णक्षेत्र निवासी कृत सम्पूर्णम् ॥



